ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VII

Subject- Hindi Second Language

Topic- भोर और बरखा

By- नीलम सौंखला

©ISWK

भोर और बरखा
मीराबाई
Chapter - 16
Class - VII (NCERT Hindi)

मीरा बाई का जीवन परिचय:- श्रीकृष्ण की महान भक्त और एक अद्वितीय कवयित्री के रूप में जानी जाने वाली मीरा बाई का जन्म सन् 1498 में राजस्थान के मेड़ता में हुआ। इनके पति उदयपुर के महाराणा भोजराज थे। ये शादी के कुछ साल बाद ही विधवा हो गईं और श्री कृष्ण-भक्ति में लीन हो गईं।

इनकी प्रमुख रचनाएँ- नरसी का मायरा , राग सोरठा के पद, राग गोविंद आदि हैं। मीरा के पद एक ग्रन्थ में भी संकलित हैं। इनकी मृत्यु के बारे में किसी को सटीक जानकारी नहीं है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि ये अंत में श्रीकृष्ण भगवान की मूर्ति में ही समा गई थीं।

सारांश(Summary) - इस पाठ में मीरा के दो पद दिए गए हैं। पहले पद में मीराबाई ने यशोदा माँ द्वारा श्रीकृष्ण को जगाने के किस्से का वर्णन किया है। मीरा के इस पद में माता यशोदा कान्हा को तरह-तरह के प्रलोभन देकर उठाने का प्रयास कर रही हैं।

दूसरे पद में मीरा ने सावन के महीने का मनमोहक वर्णन किया है। साथ ही, इस पद में उन्होंने कृष्ण के प्रति अपने प्रेम का वर्णन भी किया है।

1.

जागो बंसीवारे ललना!
जागो मोरे प्यारे!
रजनी बीती, भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे।।
उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै।।
माखन-रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ को तारै।।

पहले पद में माता यशोदा श्रीकृष्ण को प्यार से ‘बंसीवारे ललना’, ‘मोरे प्यार’ , लाल जी', कहती हैं।

कठिन शब्द –

भोर-सवेरा, रजनी-रात , किवारे- दरवाजे , मथत – मथना , सुर-देवता, नर-मनुष्य , सबद- शब्द, कुलाहल- शोरगुल , उचारे- उच्चारण करना

पद की व्याख्या: इस पद में मीराबाई ने यशोदा माँ द्वारा कान्हा जी को सुबह जगाने के दृश्य का वर्णन किया है।

यशोदा माता कान्हा जी से कहती हैं कि 'उठो कान्हा! रात ख़त्म हो गयी है और सभी लोगों के घरों के दरवाज़े खुल गए हैं। ज़रा देखो, सभी गोपियाँ दहीं को मथकर तुम्हारा मनपसंद मक्खन निकाल रही हैं। दहीं मथते समय उनके कंगनों की आवाज़ें आ रही हैं,उन्हें सुनो| हमारे दरवाज़े पर देवता और सभी मनुष्य तुम्हारे दर्शन करने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। तुम्हारे सभी ग्वाल-मित्र हाथ में माखन-रोटी लिए द्वार पर खड़े हैं और तुम्हारी जय-जयकार कर रहे हैं। वे सब गाय चराने जाने के लिए तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। इसलिए उठ जाओ कान्हा!

दूसरे पद में सावन ऋतु का वर्णन है।

2.

बरसे बदरिया सावन की।
सावन की, मन-भावन की।।
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़-घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर लावन की।।
नन्हीं-नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर! आनंद-मंगल गावन की।।

कठिन शब्द- **बरस- बरसना , बदरिया-बादल , मनवा-मन ,उमग्यो-प्रसन्न , भनक-खबर , चहुँदिस- चारों दिशाओं से , दामिन – बिजली , दमक- चमक , मेहा – मेघ (बादल)**

पद की व्याख्या: अपने दूसरे पद में मीराबाई सावन का बड़ा ही मनमोहक चित्रण कर रही हैं। पद में उन्होंने बताया है कि सावन के महीने में मनमोहक बरसात हो रही है।उमड़-घुमड़ कर बादल आसमान में चारों तरफ़ फ़ैल जाते हैं, आसमान में बिजली भी कड़क रही है। आसमान से बरसात की नन्हीं-नन्हीं बूँदें गिर रही हैं। ठंडी हवाएँ बह रही हैं, जो मीराबाई को ऐसा महसूस करवाती हैं, मानो श्रीकृष्ण ख़ुद चलकर उनके पास आ रहे हैं।

दीर्घ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. ‘बंसीवारे ललना’, ‘मोरे प्यार’, ‘लाल जी’, कहते हुए यशोदा किसे जगाने का प्रयास करती हैं और वे कौन-कौन सी बातें कहती हैं?

उत्तर. यहाँ यशोदा माँ अपने कान्हा को जगाने के लिए ‘बंसीवारे ललना’, ‘मोरे प्यारे’, ‘लाल जी’ जैसे प्यार भरे शब्द कहती हैं।

यशोदा माँ उन्हें जगाने के लिए निम्न बातें कहती हैं –

“रात खत्म हो गयी है, हर घर के दरवाज़े खुल चुके हैं, हमारे द्वार पर सभी देव और मानव तुम्हारे दर्शन करने के लिए खड़े हैं। ग्वालिनें दही मथ कर तुम्हारा मनपसंद मक्खन बना रही हैं। तुम्हारे सब दोस्त हाथ में माखन-रोटी लेकर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं, ताकि वे गाय चराने जा सकें। इसलिए मेरे प्यारे कान्हा! तुम जल्दी-से उठ जाओ।”

प्रश्न 2. पाठ के आधार पर सावन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर. सावन आते ही गर्मी का प्रकोप कम हो जाता है। चारों तरफ घने काले बादल छाने लगते हैं। आसमान में बिजलियाँ कड़कती हैं और बादल गरजते हैं। कभी हल्की तो कभी तेज़ बरसात होती है और प्रकृति फल-फूल उठती है। इस दौरान हवा में भीनी-भीनी ख़ुशबू फ़ैल जाती है और वह ठंडी व सुहावनी लगने लगती है।

लघु प्रश्नोत्तर

प्रश्न 3. पढ़े हुए पद के आधार पर ब्रज की भोर का वर्णन कीजिए।

उत्तर. पद के आधार पर ब्रज में भोर होते ही हर घर के दरवाज़े खुल जाते हैं। ग्वालिनें दही मथकर मक्खन बनाने लगती हैं, उनके कंगन की आवाज़ हर घर में गूँजती रहती है। ग्वाल बालक हाथों में मक्खन और रोटी लेकर गायें चराने की तैयारी करने लग जाते हैं।

प्रश्न 4. मीरा को सावन मनभावन क्यों लगने लगा?

उत्तर. मीरा को सावन मनभावन इसलिए लगने लगा क्योंकि यह ख़ुशनुमा मौसम उन्हें प्रभु श्री कृष्ण के आगमन का अहसास करवाता है। इस मौसम में प्रकृति बड़ी ही सुंदर हो जाती है और मीराबाई का मन प्रसन्नता व उमंग से भर जाता है।

अति लघु प्रश्नोत्तर

1 गोपियाँ ने अपने हाथों में क्या पहन रखे हैं?

उ – गोपियाँ ने अपने हाथों में कंगन पहन रखे हैं|

2 ग्वाल बाल कहाँ जाने के लिए तैयार थे?

उ - ग्वाल बाल गायें चराने जाने के लिए तैयार थे|

3 मीराबाई किसकी भक्त थीं?

उ- मीराबाई श्रीकृष्ण की भक्त थीं|

4 दूसरे पद में किस महीने का वर्णन है?

उ - दूसरे पद में सावन के महीने का वर्णन है|

---धन्यवाद---